ISSN : 2229-4767

ABHINAV KADAM

अभिनव क़दम - 24-25

संयुक्तांक

नागार्जुन

केदारनाथ अग्रवाल

शमशेर बहादुर सिंह

अज्ञेय

फ़ैज़ अहमद फ़ैज़

असरार-उल हक मजाज़

भगवतशरण उपाध्याय

भुवनेश्वर

उपेन्द्रनाथ अश्क

राधाकृष्ण

गोपाल सिंह नेपाली

आरसी प्रसाद सिंह

शताब्दी के महानायक

‘एकला चलो रे’

● रवीन्द्रनाथ टैगोर, रूपान्तरण बी. एन. गौड़

तुम्हारी पुकारों को कोई सुने ना
यदि उन पुकारों में आगे बढ़े ना
तो भी रुको मत-आगे बढ़ो
अकेले-अकेले ही चलते चलो।
अगर कोई तुमसे न बातें करे
तो भी रुको मत अकेले चलो
अकेले-अकेले ही चलते चलो।
तुम्हें देख यदि लोग मुँह मोड़ लें
सभी देख तुमको अकारण डरें
तब तुम ह्रदय के ही पट खोल दो
अपने ह्रदय से ही बातें करो
अकेले-अकेले ही चलते चलो।
यदि सब विमुख हो वापस फिरें
अंधेरे में तुम हो अकेले घिरे
पथ के हों काँटे पगों में चुभे
आपाद मस्तक रुधिर भी बहे
रुधिर बह रहा है तो बहने भी दो
अकेले-अकेले चलो तुम चलो।
यदि आँधियाँ हो बवंडर भी हो
अंधेरे में पथ का न संधान हो
कहीं भी न हो रोशनी की झलक
अँधेरा हो फैला दिशाओं तलक
तो भी रुको मत बढ़ते चलो
अकेले-अकेले ही चलते चलो।
अकेले-अकेले ही चलते चलो।

अभिनव
क़दम -24-25
(संयुक्तांक)

यह अंक

कथाकार—**श्रीलाल शुक्ल**

व

आलोचक—**कमलाप्रसाद**

की स्मृति को समर्पित

श्रीलाल शुक्ल
(1925-2011)

कमला प्रसाद
(1938-2011)

मकबूल फिदा हुसेन, पं. भीमसेन जोशी, आचार्य जानकी बल्लभशास्त्री, चन्द्रबली सिंह, प्रेमचन्द शाह, रामजी लाल चतुर्वेदी, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी–राजबहादुर गौड़, मंगलदेव पाण्डेय, व्रहवि जी एवं रामविलास पाण्डेय को 'अभिनव कदम परिवार' की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

फार्म :: 4

प्रेस तथा पुस्तक पंजीयन अधिनियम के अन्तर्गत 'अभिनव कदम' नामक पत्रिका से संबंधित स्वामित्व और अन्य बातों का विवरण–

1. **प्रकाशन**	:	223, प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड, निज़ामुद्दीनपुरा, मऊ
2. **प्रकाशन की आवर्तित**	:	अर्द्धवार्षिक
3. **मुद्रक का नाम**	:	जयप्रकाश धूमकेतु
क्या भारतीय हैं?	:	हाँ
पता	:	223, प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड, निज़ामुद्दीनपुरा, मऊ
4. **प्रकाशक का नाम**	:	जयप्रकाश धूमकेतु
क्या भारतीय हैं?	:	हाँ
पता	:	223, प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड, निज़ामुद्दीनपुरा, मऊ
5. **संपादक का नाम**	:	जयप्रकाश धूमकेतु
क्या भारतीय हैं?	:	हाँ
पता	:	223, प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड, निज़ामुद्दीनपुरा, मऊ
6. **उन व्यक्तियों के नाम व पते जो पत्रिका के मालिक और कुल पूंजी के एक-एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार या भागीदार हैं**	:	साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था, 'मंथन' 223, प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड, निज़ामुद्दीनपुरा, मऊ

मैं जय प्रकाश धूमकेतु एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार उपरोक्त विवरण सही है। ***–जय प्रकाश धूमकेतु***

संस्थापक–संरक्षक : अब्दुल बिस्मिल्लाह, उत्तमचन्द जन संस्कृति के पक्ष में आयोजन

वर्ष : 15 अंक : 24-25 दिस. 2010 - नव. 2011

अभिनव क़दम -24-25

(संयुक्तांक)

प्रधान संपादक : चन्द्रदेव राय

संपादक : जयप्रकाश धूमकेतु

संपादन सहयोग : शिवकुमार पराग
संजय श्रीवास्तव
कमलेश सिंह
संजय राय
राघवेन्द्र प्रताप सिंह

प्रसार व्यवस्था : श्रीमती राजेश्वरी

संपर्क :

'प्रकाश निकुंज'

223, पावर हाउस रोड, निजामुद्दीनपुरा

मऊनाथ भंजन, मऊ (उ.प्र.)-275101

फोन : 0547–2223113, मोबाइल : 09415246755, 09415241755

ई-मेल : patrika.abhinavkadam@gmail.co

सहयोग राशि

यह अंक : 100.00

संस्थाओं के लिए : 200.00

आजीवन सदस्यता : 2000.00

प्रकाशक : साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था, 'मंथन' मऊनाथ भंजन, मऊ (उ.प्र.)

अक्षर संयोजन : श्वेता जॉब्स, बहादुरगंज, इलाहाबाद ▪ मोबाइल : 9451451587

प्रिंन्टिंग : पुष्पी आफसेट, बाई का बाग, इलाहाबाद (उ.प्र.)

संपादन/संचालन/अवैतनिक, अव्यवसायिक। अभिनव कदम से सम्बन्धित सभी विवाद मऊ न्यायालय के अधीन होंगे। अभिनव कदम में प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।

हिन्दी अकादमी, दिल्ली

(राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार)

समुदाय भवन, पदम नगर, किशनगंज, दिल्ली-7

अकादमी के प्रकाशन

क्र.	पुस्तक का नाम	लेखक/सम्पादक/अनुवादक	मूल्य (रु. में)
1.	दिल्ली जो एक शहर है	महेश्वर दयाल	325.00
2.	यादगारे गालिब	मो. अल्ताफ हुसैन हाली अनु.–अब्दुल बिस्मिल्लाह	125.00
3.	ज़िक्रे मीर	भाषांतरकार–अजमल अजमली	100.00
4.	भारतीय संस्कृति मुगल विरासत : औरंगजेब के फरमान	डॉ. विश्वंभरनाथ पांडे	45.00
5.	राष्ट्रभाषा हिन्दी का स्वरूप विकास और समस्याएँ	डॉ. विजयेंद्र स्नातक	12.00
6.	मंझधार और किनारा	सुहेल एजाज सिद्दीकी	100.00
7.	महाप्राण गांधी	उमेश सहगल अनुवादक : डॉ. रामप्रकाश	125.00
8.	डॉ. जाकिर हुसैन	जियाउल हसन फारूकी	50.00
9.	कविता—दशक	सं.–डॉ. केदारनाथ सिंह	75.00
10.	समीक्षा—दशक	सं.–प्रो. निर्मला जैन	75.00
11.	भाषा-विमर्श	सं.–डॉ. मुकुंद द्विवेदी	75.00
12.	भारतीय भाषाएँ और राष्ट्रीय अस्मिता	सं.–डॉ. मुकुंद द्विवेदी	160.00
13.	दिल्ली और हिन्दी साहित्य	सं.–सचिव हिन्दी अकादमी, दिल्ली	300.00
14.	अस मानस मानस चख चाही	सं.–सचिव हिन्दी अकादमी, दिल्ली	50.00
15.	सुभाष प्रश्नावली	सं.–सचिव, हिन्दी अकादमी, दिल्ली	20.00
16.	सम्भावना	सं.–सचिव, हिन्दी अकादमी, दिल्ली	150.00
17.	क्रांतिमूर्ति दुर्गा भाभी	सं.–डॉ. वचनेश त्रिपाठी	50.00
18.	शताब्दी का निबन्ध	सं.–डॉ. मुकुंद द्विवेदी	550.00
19.	हिन्दी गद्य एवं अन्य विधाएँ	सं.–डॉ. मुजीब रिजवी डॉ. हीरालाल बाछोतिया	450.00
20.	सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा	लेखक—मोहनदास करमचन्द गांधी अनु.—काशिनाथ त्रिवेदी	140.00
21.	हिन्द स्वराज	लेखक—मोहनदास करमचन्द गाँधी अनु.—अमृतलाल ठाकोरदास नाणावटी	45.00
22.	इन्द्रप्रस्थ भारती त्रैमासिक पत्रिका	सं.–सचिव हिन्दी अकादमी, दिल्ली	

(मूल्य एक प्रति 25/- रु., वार्षिक शुल्क 100/- रु., त्रैवार्षिक शुल्क 300/- रु.)

उपर्युक्त सभी पुस्तकें अकादमी के हिन्दी प्रसार केन्द्रों से या अग्रिम धनराशि (मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा सचिव, हिन्दी अकादमी, दिल्ली के नाम) भेजकर मँगवायी जा सकती हैं। कृपया अधिक जानकारी के लिए पत्रिका अनुभाग, हिन्दी अकादमी, दिल्ली (मुख्यालय), पदम नगर तथा हिन्दी प्रसार केन्द्रों से सम्पर्क करें।

अनुक्रम

1. सम्पादकीय / 7

बाबा नागार्जुन : जन्म ज्येष्ठ पूर्णिमा 1911–निधन 05 नवम्बर 1998

1. नागार्जुन की कविता : जीवन सन्दर्भ और संघर्ष चेतना / वीरेन्द्र मोहन / 13
2. मैं प्रगतिशील हूँ कम्युनिस्ट नहीं : सन्दर्भ नागार्जुन / सुरेश पण्डित / 20
3. सततता की विविधता और विविधता की सततता / श्रीराम त्रिपाठी / 27
4. नागार्जुन संवाद उर्फ रकीबों की जुगलबन्दी / रोहिताश्व / 34
5. जनकवि नागार्जुन की काव्य धर्मिता : प्रयोजनीयता का परिप्रेक्ष्य / मृदुला शुक्ल / 48
6. नागार्जुन की कविताएँ / 57

केदारनाथ अग्रवाल : जन्म 01 अप्रैल, 1911–निधन 22 जून 2000

7. केदार की कविता का लोक पक्ष / जीवन सिंह / 69
8. पारदर्शी मैत्रीभाव की कविता में निहित मुखर जनवादी अभिव्यक्ति / ए. अरविन्दाक्षन / 81
9. केदारनाथ अग्रवाल की प्रगतिशील चेतना / महेन्द्र राय / 88
10. केदारनाथ अग्रवाल की कविताएँ / 93

शमशेर बहादुर सिंह : जन्म 13 फरवारी, 1911–निधन 12 मई, 1993

11. शमशेर की दुनियाँ / श्री प्रकाश शुक्ल / 100
12. जमाने का रद्दोबदल कोई लाये / वशिष्ट अनूप / 110
13. शमशेर बहादुर सिंह : एक स्मृति चित्र / रामकमल राय / 117
14. शमशेर का पत्र केदारनाथ अग्रवाल के नाम / 123
15. शमशेषर बहादुर सिंह की कविताएँ / 126

अज्ञेय : जन्म 07 मार्च, 1911–निधन 04 अप्रैल, 1987

16. अज्ञेय की कविता कला / रेवती रमण / 134
17. अज्ञेय का व्यष्टि बोध / रामकमल राय / 143
18. शेखर : एक जीवनी—विविध आयाम / अभिजीत सिंह / 154
19. अज्ञेय की कविताएँ / 166

फ़ैज़ अहमद फ़ैज : जन्म 13 फरवरी, 1911–निधन 20 नवम्बर, 1984

20. फ़ैज़ : अवाम के अरमानों—स्वप्नों का शायर / शकील सिद्दीकी / 170
21. फ़ैज़ : मुहब्बतें जो फ़ना नहीं हुई / शकील सिद्दीकी / 180
22. फ़ैज़ की कविताएँ / 194

मजाज़ : जन्म 19 अक्टूबर, 1911–निधन 05 दिसम्बर, 1955

23. मजाज़ की शायरी का शुरुआती दौर / अली अहमद फरतमी / 201
24. मजाज़ रूमनियत का शहीद / आले अहमद सुरूर, अनु. नफीस अहमद / 214
25. मुझे जाना है एक दिन तेरी बज्में नज़ से आखिर / प्रतिमा राकेश / 223
26. मजाज़ की कविताएँ / 227

भगवत शरण उपाध्याय : जन्म 1910–निधन 09 अगस्त, 1982

27. भगवत शरण उपाध्याय इतिहास का सिंहावलोकन / खगेन्द्र ठाकुर / 239

28. भगवत शरण उपाध्याय की इतिहास दृष्टि और रचना विवेक / रामनिहाल गुंजन / 246
29. भारत के सांस्कृतिक राजदूत : भगवत शरण उपाध्याय / अरुण वर्मा / 253
30. हिन्दी साहित्य को डॉ. भगवत शरण उपाध्याय का प्रदेप / अरुण वर्मा / 262
31. दिनकर की उर्वशी / भगवत शरण उपाध्याय / 266
32. श्री राहुल सांकृत्यायन / भगवत शरण उपाध्याय / 286
33. भारतीय साहित्य में प्रगतिशील संवेदन / भगवत शरण उपाध्याय / 290

भुवनेश्वर : जन्म 1911–निधन 1955-56 (बनारस में)

34. भुवनेश्वर की कहानियाँ / भारत भारद्वाज / 299
35. भुवनेश्वर प्रसाद / डॉ. रामविलास शर्मा / 305
36. नयी कहानी की पहली कृति : भेड़िये / शुकदेव सिंह / 308
37. भुवनेश्वर को याद करते हुए (कविता) / शमशेर बहादुर सिंह / 311
38. भेड़िये (कहानी) / भुवनेश्वर / 314

उपेन्द्रनाथ अश्क : जन्म 14 दिसम्बर, 1910–निधन 19 जनवरी, 1996

39. उपेन्द्रनाथ अश्क : आओ ये चन्द लम्हे तो हँसकर गुजार लें / सुनील विक्रम सिंह / 319
40. बेमिसाल थे अश्क जी (संस्मरण) / ममता कालिया / 325
41. उपेन्द्रनाथ अश्क : एक युग एक प्रतीक / धर्मपाल आर्य / 329
42. डाची (कहानी) / उपेन्द्रनाथ अश्क / 336

राधाकृष्ण : 18 सितम्बर, 1910–निधन 03 फरवरी, 1979

43. राधाकृष्ण : प्रेमचन्द के प्रिय और उन्हीं की परम्परा के कथाकार / बलभद्र / 343
44. रामलीला तब और अब / हितेश कुमार सिंह / 349
45. राधा कृष्ण का रचना संसार / श्रवण कुमार गोस्वामी / 353
46. राधा कृष्ण और आकाशवाणी / श्रवण कुमार गोस्वामी / 359
47. मूल्य (कहानी) / राधा कृष्ण / 369
48. एक सड़ी हुई बिल्ली (व्यंग्य) / राधा कृष्ण / 374

गोपाल सिंह नैपाली : जन्म 11 अगस्त, 1911–निधन 17 अप्रैल, 1963

49. देशज संवेदना और जनपक्ष धरता का कवि : गोपाल सिंह नैपाली / ऋषिकेश राय / 382
50. गोपाल सिंह नैपाली और उनका स्वाधीन कलम / कुमार निर्मलेन्दु / 386
51. मुक्ति संघर्ष का गायक : कवि गोपाल सिंह नैपाली / नन्द किशोर नन्दन / 395
52. बहुआयामी चेतना के धनी : गोपाल सिंह नैपाली / सुरेश उजाला / 405
53. गोपाल सिंह नैपाली की कविताएँ / 408

आरसी प्रसाद सिंह : जन्म 19 अगस्त, 1911–निधन 15 नवम्बर, 1990

54. उड़ा पाल माँझी बढ़ा नाव आगे / रश्मि रेखा / 417
55. अपने ही सौरभ से पागल / आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री / 423
56. संस्कार जनमानस से लुप्त होते जा रहे हैं / आरसी प्रसाद सिंह / 429
(आरसी प्रसाद सिंह से राजेन्द्र परदेसी की बातचीत)
57. आरसी प्रसाद सिंह की कविताएँ / 433
58. एकला चलो रे : रवीन्द्रनाथ टैगोर की प्रसिद्ध कविता / कव्हर-2
59. ईश्वर के पीछे / दिनेश कुशवाह / कव्हर-3
60. रचनाकारों के सम्पर्क सूत्र / 437

सम्पादकीय

वह जन मारे नहीं मरेगा

यह वर्ष हिन्दी, उर्दू, तेलुगू, गुजराती के बहुत से कद्दावर साहित्यकारों का शताब्दी वर्ष है। हिन्दी साहित्य के शलाका पुरुष नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर बहादुर सिंह, अज्ञेय, भगवत शरण उपाध्याय, भुवनेश्वर, उपेन्द्रनाथ अश्क, राधाकृष्ण, गोपाल सिंह नेपाली, आरसी प्रसाद सिंह, फ़ैज़ अहमद फैज़, असरार-उल हक 'मजाज़' तेलुगू साहित्य के श्री रंगम् श्रीनिवास 'श्री श्री', गुजराती साहित्य के उमाशंकर जोशी, भोगीलाल गान्धी, कृष्णलाल श्री धरणी जैसी विभूतियाँ 100 वर्ष पहले भारत भूमि पर जन्म लेकर जीवन पर्यन्त साहित्य सृजन की ज्योति जलाई। बंग्ला साहित्य के शीर्ष पुरुष रवीन्द्र नाथ टैगोर ने सौ वर्ष पहले अपने बहुचर्चित उपन्यास 'गोरा' की रचना की। इन तमाम साहित्यिक विभूतियों की लम्बी रचनात्मक यात्रा को आज के सन्दर्भ में याद करना हम सभी साहित्यानुरागियों का कर्त्तव्य बनता है।

सन्दर्भित साहित्यकारों के शताब्दी वर्ष में तमाम सरकारी तथा गैर सरकारी प्रतिष्ठानों द्वारा अपनी रूचि व लगाव के अनुसार शताब्दी वर्ष समारोहों का आयोजन किया व कराया जा रहा है। तमाम पत्र-पत्रिकाओं के शताब्दी विशेषांक प्रकाशित किये जाने का सिलसिला चल पड़ा है। यह हमारे साहित्यिक महापुरुषों का शताब्दी वर्ष है। शताब्दी वर्ष में इन तमाम साहित्यिक विभूतियों को याद करने का अर्थ है आज के एक सौ वर्ष पहले की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक व वैश्विक स्थितियों को याद करना भी है जिनसे रू-ब-रू होकर ये तमाम साहित्यकार अपनी साहित्यिक यात्रा को कालजयी कृतियों के सृजन के साथ आगे बढ़ा रहे थे।

1910-11 का दौर ब्रिटिश हुकूमत और उसके उपनिवेश के चरम उत्कर्ष का दौर था। एशिया, अफ्रीका और द० अमेरिका के बहुतायत देश गुलामी की जंजीरों में जकड़े हुए थे। दमन, शोषण, उत्पीड़न का क्रूर ब्रिटिश चेहरा सामने था और उनके साथ खड़े थे भारत के तमाम सामन्त, जमींदार, साहूकार और पुरोहित। बाहरी और भीतरी दमनकारी शक्तियों का शिकार बन रही थी इस देश की आम जनता। 1917 की रूसी क्रान्ति की घटना ने दुनिया के तमाम गुलाम देशों की जनता के भीतर नई ऊर्जा का संचार कर दिया था। जगह-जगह गुलामी की बेड़ियों से मुक्ति का बिगुल बज उठा।

विश्व की आर्थिक मन्दी की कोंख से जन्मे प्रथम विश्वयुद्ध (1914-1919) और द्वितीय विश्वयुद्ध (1939-45) का काला अध्याय इतिहास के पन्नों में दर्ज हो चुका था। भारत में 1857 का विद्रोह जन-जन के भीतर ब्रिटिश उपनिवेश के विरुद्ध जागृति का आधार बन चुका था।

1919 की जलियाँवाला बाग की क्रूरतम घटना ने नौजवान पीढ़ी के भीतर क्रान्तिकारी चेतना का संचार कर दिया था। 1929 में काकोरी काण्ड की घटना घट चुकी थी। 23 मार्च 1931 को भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव ने फांसी के फन्दे को चूम लिया था। 1936 में लखनऊ में स्टूडेण्ट फेडरेशन, किसान सभा, प्रगतिशील लेखक संघ का राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न हो चुका था। 1942 का अंग्रेजों भारत छोड़ो का स्वतन्त्रता आन्दोलन ब्रिटिश हुकूमत की जड़ें हिला चुका था। 1943 में रंगकर्मियों व संस्कृतकर्मियों का जन नाट्य संघ (इप्टा) अस्तित्व में आ चुका था। 'यह जंग है जंगे आजादी, आजादी के परचम के तले' जैसे इन्कलाबी तराने हवा में तैर रहे थे। और फिर शहीदों की कुर्बानी रंग लायी और 15 अगस्त 1947 को यह मुल्क आजाद हुआ। एक खण्डित आजादी, आधी-अधूरी खून से सनी हुई आधी रात की आजादी।

उक्त सभी घटनाक्रम को हमें शताब्दी वर्ष के उन तमाम महानायकों की जिन्दगी और सृजन कर्म से जोड़ कर देखना होगा। आजादी के पहले और आजादी के बाद की परिस्थितियों में पले-बढ़े तमाम संघर्षशील चेता साहित्य के महानायकों ने अपनी अनुभूति की अभिव्यक्ति विभिन्न कृतियों के माध्यम से की। अपने दौर में आजादी की जद्दोजेहद में शामिल कवि, कथाकार 'कलम के सिपाही' की भूमिका में नायकत्व प्राप्त कर चुके थे। और आज हम एक सौ वर्ष बीतने के बाद उन्हें साहित्य के महानायक के रूप में याद कर रहे हैं।

आज जब हम अपने महानायकों की शताब्दी मना रहे हैं तो फिर हमें आज के समय के सवालों से रू-ब-रू तो होना ही पड़ेगा। मौजूदा आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और वैश्विक घटनाक्रम पर पैनी नज़र रखनी पड़ेगी। 20वीं सदी के प्रारम्भिक दौर और 21वीं सदी के प्रारम्भिक दौर में बदले परिदृश्य के बाद भी बहुत कुछ समानतायें मिल जायेगी। सौ वर्ष पहले ब्रिटिश उपनिवेशवाद का खतरा मौजूद था और सौ वर्ष बाद आज अमरीकी साम्राज्यवाद का खतरा मौजूद है। भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, मुक्तबाजार व्यवस्था की अमरीकी सैद्धान्तिकी पूरे दुनिया पर थोपी जा चुकी है। उपभोक्तावादी संस्कृति का मायावी जादू सर चढ़कर बोल रहा है। लोकतन्त्र के बहाने सब कुछ सब जगह स्वीकार किया जा रहा है। अस्वीकार की भाषा अमरीका को स्वीकार नहीं है। अस्वीकार की भाषा बोलने और प्रतिरोध में खड़े होने वाले देश अमरीका की निगाह में असभ्य हैं। तब फिर दुनिया के प्रत्येक असभ्य देशों को सभ्यता का पाठ पढ़ाया जाना अमरीका के लिए जरूरी हो गया है। अफगानिस्तान, इराक और लीबिया की तरह। यह अमरीका द्वारा प्रतिपादित सभ्यताओं के युद्ध की सैद्धान्तिकी है।

आज एक तरफ मानवीय संवेदना का संकट गहराता जा रहा है दृष्टिहीन, दिशाहीन, विवेकहीन बाजार की ओर भागती बेतहाशा भीड़ और उस भीड़ में उपभोक्तावादी संस्कृति का खिल-खिलाता अमानीय चेहरा सामने है तो दूसरी तरफ भ्रष्टाचार, महंगाई और आवारा पूँजी के खेल से तबाह होती आम जनता त्रस्त है। गहराता कृषि संकट, गाँव से किसानों-मजदूरों का शहरों की ओर पलायन तेज हुआ है। किसानों की आत्महत्याओं का बढ़ता सिलसिला जारी है। सियासत के बाजार में जाति, धर्म, सम्प्रदाय, भाषा, क्षेत्र की खरीद-फरोख्त जोरों पर है।